10

कक्षा में आनंद— सीखने का जीवंत अनुभव

पद्मा यादव*

कक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने का स्थान नहीं है, बल्कि यह बच्चों के सर्वांगीण विकास और सक्रिय अधिगम का केंद्र होती है। लेख मे बताया गया है कि कक्षा में आनंद तब उत्पन्न होता है जब वहाँ सुरक्षा, स्वच्छता, पर्याप्त रोशनी और बाल-अनुकूल फर्नीचर उपलब्ध हो। कक्षा का वातावरण आकर्षक, प्रेरक और बच्चों की रुचियों के अनुसार सजाया जाता है, जिसमें उनके स्वयं के कार्य, चित्र, चार्ट और थीम आधारित सामग्री शामिल होती है। शिक्षक की पेडागॉजी बाल-केंद्रित, अनुभवात्मक, समावेशी और संवेदनशील होती है। वे सरल, स्नेहपूर्ण और बहुभाषी-अनुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं, जिससे बच्चे बिना डर और बाधा के सीखने में सक्रिय रहते हैं। मूल्यांकन सहयोगात्मक, सतत और सकारात्मक होता है, जिसमें बच्चों की गलतियों को सीखने का अवसर माना जाता है। शिक्षक बच्चों को आत्म-मूल्यांकन और सहपाठी मूल्यांकन के अवसर भी देते हैं। इसके साथ ही, माता–पिता और समाज की सहभागिता आवश्यक है। घर और विद्यालय का संबंध, स्थानीय संसाधनों का उपयोग और सामुदायिक परियोजनाएँ सीखने को वास्तविक जीवन से जोड़ती हैं। इस प्रकार, आनंददायी शिक्षा बच्चों को सक्रिय, आत्मविश्वासी और सीखने के लिए उत्साहित बनाती है।

कक्षा में आनंद आधुनिक शिक्षा की केंद्रीय अवधारणा है, जो यह मानती है कि सीखना तभी प्रभावी, स्थायी और सार्थक होता है जब बच्चा आनंद, सुरक्षा और आत्मविश्वास से भरे वातावरण में सीखता है। कक्षा केवल विषयवस्तु के हस्तांतरण का स्थान नहीं है, बल्कि यह बच्चों के भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक विकास का साझा मंच है। जब कक्षा में आनंद होता है तब सीखना बोझ नहीं रह जाता, बल्कि बच्चों के लिए एक स्वाभाविक, जीवंत और उत्साहपूर्ण अनुभव बन जाता है।

कक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने का स्थान नहीं है, बल्कि यह बच्चों के लिए आनंद, सुरक्षा और आत्मविश्वास से भरपूर वातावरण भी होनी चाहिए। जब कक्षा में सीखने की प्रक्रिया आनंदपूर्ण होती है, तब बच्चे स्वाभाविक रूप से सक्रिय, जिज्ञासु और रचनात्मक बनते हैं। ऐसी कक्षा में भय, दबाव और प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहयोग, संवाद और सहभागिता का माहौल होता है।

आनंदपूर्ण कक्षा का निर्माण शिक्षक की सकारात्मक भूमिका से होता है। शिक्षक यदि बच्चों

**आचार्या*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली 110 016

की भावनाओं को समझते हुए, प्रेमपूर्ण व्यवहार अपनाते हैं और सीखने को खेल, गतिविधियों, कहानियों व अनुभवों से जोड़ते हैं, तो बच्चे सीखने को बोझ नहीं, बल्कि उत्सव के रूप में स्वीकार करते हैं। इसके साथ ही, बच्चों को अपनी बात कहने, प्रश्न पूछने और गलती करने की स्वतंत्रता देना भी कक्षा में आनंद का महत्वपूर्ण आधार है।

अतः कक्षा में आनंद केवल हँसी-मजाक तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा वातावरण है जहाँ हर बच्चा सम्मानित, सुरक्षित और प्रेरित महसूस करता है। ऐसी आनंदपूर्ण कक्षा ही समग्र विकास, सार्थक अधिगम और जीवनभर सीखने की नींव रखती है।

कक्षा में आनंद स्थापित करने में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक केवल विषय का ज्ञाता नहीं, बल्कि बच्चों के सीखने के सहयात्री होते हैं। जब शिक्षक बच्चों की भावनाओं को समझते हैं, उनकी रुचियों और क्षमताओं का सम्मान करते हैं तथा स्नेहपूर्ण और संवेदनशील व्यवहार अपनाते हैं, तब कक्षा में एक सकारात्मक माहौल बनता है। शिक्षक का मुस्कराता चेहरा, प्रोत्साहन भरे शब्द और धैर्यपूर्ण सुनना बच्चों के भीतर विश्वास और आनंद का संचार करता है। कक्षा में आनंद स्थापित करना प्रभावी शिक्षण-अधिगम की मूल शर्त है। इसके लिए शिक्षक की भूमिका, कक्षा का वातावरण और सीखने की प्रक्रिया— तीनों का संतुलित होना आवश्यक है।

कक्षा में आनंद स्थापित करने की रणनीतियाँ

आनंदपूर्ण कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया बाल-केंद्रित होती है। यहाँ पाठ्यपुस्तक शिक्षा का एकमात्र स्रोत नहीं होती, बल्कि खेल, गतिविधियाँ, प्रयोग, कहानियाँ, नाटक, गीत और वास्तविक जीवन के अनुभव सीखने के माध्यम बनते हैं। जब बच्चे खेलते हुए सीखते हैं, तब उनका मन सीखने में स्वतः रम जाता है। गतिविधि-आधारित और अनुभवात्मक अधिगम बच्चों को सक्रिय बनाता है तथा उनके भीतर जिज्ञासा और खोज की भावना को प्रोत्साहित करता है।

कक्षा में आनंद स्थापित करने हेतु निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं—

1. *सकारात्मक और सुरक्षित वातावरण का निर्माण*— कक्षा में भयमुक्त, अपनत्वपूर्ण और सम्मानजनक वातावरण बनाया जाए, जहाँ प्रत्येक बच्चा स्वयं को सुरक्षित और स्वीकार्य महसूस करे।
2. *गतिविधि-आधारित एवं खेल-आधारित शिक्षण*— पाठ्यवस्तु को खेल, प्रयोग, नाटक, कहानी और समूह गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत करने पर सीखना आनंददायक बनता है।
3. *बच्चों की सक्रिय सहभागिता*— बच्चों को प्रश्न पूछने, विचार व्यक्त करने और निर्णय लेने के अवसर दिए जाएँ। उनकी भागीदारी से कक्षा जीवंत बनती है।
4. *विविध शिक्षण विधियों का प्रयोग*— गीत, कविता, चित्र, टी.एल.एम., डिजिटल साधन और स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर सीखने में रुचि उत्पन्न की जा सकती है।

5. *शिक्षक-विद्यार्थी के बीच स्नेहपूर्ण संबंध*— शिक्षक का सहानुभूतिपूर्ण, संवेदनशील और प्रेरक व्यवहार बच्चों में आत्मविश्वास और आनंद को बढ़ाता है।
6. *गलतियों को सीखने का अवसर मानना*— बच्चों की गलतियों पर दंड के बजाय मार्गदर्शन दिया जाए, ताकि वे बिना डर के सीख सकें।
7. *सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा देना*— समूह कार्य और सहपाठी सीखने से आपसी सहयोग, संवाद और आनंद विकसित होता है।
8. *उत्सव, उपलब्धियों और प्रयासों की सराहना*— बच्चों के प्रयासों और छोटी-छोटी सफलताओं की प्रशंसा करने से उनमें प्रसन्नता और सीखने की प्रेरणा बढ़ती है।

इस प्रकार, उपयुक्त रणनीतियों के माध्यम से कक्षा को केवल अध्ययन का स्थान न बनाकर एक आनंदपूर्ण, जीवंत और समावेशी रूप से सीखने का अनुभव बनाया जा सकता है।

आनंददायी शिक्षा के कक्षा-कक्ष कैसे होते हैं?

आनंददायी शिक्षा के कक्षा-कक्ष केवल बैठकर पढ़ने का स्थान नहीं, बल्कि बच्चों के सर्वांगीण विकास और सक्रिय अधिगम का जीवंत केंद्र होते हैं। ऐसे कक्षा-कक्ष में भौतिक, भावनात्मक और शैक्षिक— तीनों पक्षों का संतुलित समावेश दिखाई देता है। कक्षा-कक्ष सुरक्षित, स्वच्छ, हवादार और पर्याप्त रोशनी वाला होता है, जहाँ फर्नीचर बच्चों की आयु, कद और आवश्यकता के अनुरूप होता है, ताकि वे सहज और आरामदायक महसूस करें। वातावरण आकर्षक और प्रेरक होता है— दीवारों पर बच्चों के अपने कार्य, चित्र, चार्ट, कविताएँ और सीखने से जुड़े पोस्टर लगे होते हैं, जो कक्षा को बच्चों की अपनी जगह बनाते हैं और उनमें गर्व व आत्मविश्वास जगाते हैं।

आनंददायी कक्षा-कक्ष में बैठने की व्यवस्था लचीली होती है, जहाँ पंक्तिबद्ध बैठने के साथ-साथ समूह में बैठने, फर्श पर गतिविधियाँ करने और आपसी चर्चा की पूरी सुविधा होती है। ऐसे कक्षा-कक्ष में पठन कोना, कला कोना, गणित/खेल कोना जैसे सीखने के कोने बनाए जाते हैं, जो बच्चों को स्वतंत्र रूप से खोजने, प्रयोग करने और सीखने के अवसर देते हैं। यह कक्षा-कक्ष भयमुक्त और भावनात्मक रूप से सुरक्षित होता है, जहाँ बच्चे निडर होकर अपनी बात रख सकते हैं, प्रश्न पूछ सकते हैं और गलती को सीखने की प्रक्रिया का स्वाभाविक हिस्सा मान सकते हैं।

आनंददायी शिक्षा के कक्षा-कक्ष सहभागिता को प्रोत्साहित करने वाले होते हैं। यहाँ संवाद, सहयोग और सामूहिक गतिविधियों के लिए पर्याप्त स्थान और अवसर उपलब्ध होते हैं। स्थानीय संदर्भों से जुड़ी शिक्षण सामग्री, खेल-खिलौने, टी.एल.एम. और डिजिटल साधनों का संतुलित उपयोग सीखने को जीवन से जोड़ता है और बच्चों की रुचि को बनाए रखता है। आनंददायी शिक्षा के कक्षा-कक्ष ऐसे होते हैं जो बच्चों को सुरक्षित, सम्मानित और प्रेरित अनुभव कराते हुए उन्हें सक्रिय, आत्मविश्वासी और आनंद के साथ सीखने वाला बनाते हैं।

आनंददायी कक्षा की दीवारें कैसी होती हैं?

आनंददायी कक्षा की दीवारें केवल सजावट के लिए नहीं होतीं, बल्कि वे बच्चों के लिए मौन शिक्षक की

भूमिका निभाती हैं। ऐसी दीवारें बच्चों को बिना दबाव के देखने, पढ़ने, सोचने और सीखने के अवसर देती हैं। जब कक्षा की दीवारें बाल-अनुकूल, सुव्यवस्थित और अर्थपूर्ण होती हैं, तब वे सीखने की प्रक्रिया को स्वाभाविक रूप से आनंददायी बना देती हैं।

आनंददायी कक्षा की दीवारों के रंग हल्के, शांत और आँखों को सुकून देने वाले होते हैं, जिससे बच्चों का ध्यान भटके बिना सीखने पर केंद्रित रहता है। दीवारें साफ-सुथरी और संतुलित रूप से सजी होती हैं; उन पर अनावश्यक या अत्यधिक सामग्री नहीं होती। दीवारों पर प्रदर्शित सभी सामग्री बच्चों की आँखों की ऊँचाई पर होती है, ताकि बच्चे स्वयं उन्हें देख सकें, पढ़ सकें और उनसे संवाद स्थापित कर सकें। ऐसी कक्षा की दीवारों पर बच्चों का स्वयं का कार्य प्रमुख रूप से प्रदर्शित होता है, जैसे— उनके बनाए चित्र, लेखन, गणितीय कार्य, शिल्प और रचनाएँ। इससे बच्चों में गर्व, आत्मसम्मान और कक्षा से जुड़ाव की भावना विकसित होती है। इसके साथ ही, सीखने से जुड़े सरल और स्पष्ट चार्ट तथा पोस्टर भी लगाए जाते हैं, जिनमें अक्षर, शब्द, संख्या, आकृतियाँ, पर्यावरण और नैतिक मूल्यों से संबंधित सामग्री शामिल होती है।

आनंददायी कक्षा की दीवारों पर थीम आधारित प्रदर्शन भी किया जाता है, जो पाठ्यक्रम या वर्तमान विषय के अनुसार समय-समय पर बदलता रहता है। इससे कक्षा में नवीनता बनी रहती है और सीखना जीवंत होता है। भाषा और गणित के कोने में शब्द भंडार, छोटी कविताएँ, पहेलियाँ, संख्या रेखा और पैटर्न जैसी सामग्री प्रदर्शित की जाती है, जो बच्चों को स्वतंत्र रूप से देखने और सोचने के लिए प्रेरित करती है। इसके अतिरिक्त, दीवारों पर मूल्य और व्यवहार से जुड़े छोटे-छोटे संदेश और चित्र होते हैं, जैसे— सहयोग, स्वच्छता, समय पालन, दया और साझा करने की भावना। स्थानीय संदर्भों और संस्कृति को दर्शाने वाले चित्र, लोककला, त्योहार और दैनिक जीवन से जुड़ी सामग्री बच्चों को अपने परिवेश से जोड़ती है और सीखने को अर्थपूर्ण बनाती है। इस प्रकार से आनंददायी कक्षा की दीवारें जब सोच-समझकर और बाल-केंद्रित दृष्टि से सजाई जाती हैं, तो वे बच्चों के लिए निरंतर सीखने, प्रेरणा और आनंद का सशक्त माध्यम बन जाती हैं।

आनंददायी कक्षा में ब्लैकबोर्ड/ग्रीन बोर्ड का प्रयोग कैसे होता है?

आनंददायी कक्षा में ब्लैकबोर्ड या ग्रीन बोर्ड केवल लिखने का साधन नहीं होता, बल्कि यह शिक्षक और बच्चों के बीच संवाद का सशक्त माध्यम बनता है। जब बोर्ड का स्वरूप बाल-अनुकूल होता है और उसका उपयोग उद्देश्यपूर्ण ढंग से किया जाता है, तब सीखना सरल, स्पष्ट और आनंदपूर्ण हो जाता है। इन कक्षाओं में प्रयुक्त ब्लैकबोर्ड/ग्रीन बोर्ड साफ, चिकना और बिना दरार का होता है, ताकि लिखावट स्पष्ट दिखाई दे। बोर्ड का आकार और ऊँचाई ऐसी होती है कि कक्षा के अंतिम पंक्ति में बैठा बच्चा भी उसे आसानी से देख सके। इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि बोर्ड पर तेज रोशनी का प्रतिबिंब न पड़े, जिससे बच्चों की आँखों पर जोर न पड़े। अच्छी गुणवत्ता की, कम धूल उड़ाने वाली चॉक या सुरक्षित मार्कर का प्रयोग किया जाता है, ताकि बच्चों का स्वास्थ्य सुरक्षित रहे।

ऐसी कक्षा में बोर्ड पर लिखावट स्पष्ट, बड़े और सुंदर अक्षरों में होती है। शब्दों और पंक्तियों के बीच पर्याप्त दूरी रखी जाती है, जिससे बच्चे आसानी से पढ़ और समझ सकें। बोर्ड पर अनावश्यक जानकारी नहीं भरी जाती; केवल वही बिंदु, शब्द, चित्र या उदाहरण लिखे जाते हैं जो सीखने के उद्देश्य से सीधे जुड़े हों। इससे बच्चों का ध्यान केंद्रित रहता है और भ्रम की स्थिति नहीं बनती।

आनंददायी कक्षा में ब्लैकबोर्ड/ग्रीन बोर्ड का उपयोग केवल लेखन तक सीमित नहीं रहता। शिक्षक बोर्ड पर छोटे-छोटे चित्र, रेखाचित्र, आरेख और तालिकाएँ बनाकर अवधारणाओं को स्पष्ट करते हैं। रंगीन चॉक या मार्कर का सीमित और संतुलित प्रयोग मुख्य बिंदुओं को उभारने में सहायक होता है और सीखने को रोचक बनाता है। यहाँ महत्वपूर्ण यह भी है कि बच्चों को बोर्ड के प्रयोग में सहभागी बनाया जाए। बच्चों को बोर्ड पर लिखने, चित्र बनाने, उत्तर हल करने या अपने विचार प्रस्तुत करने के अवसर दिए जाते हैं। इससे बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनते हैं। शिक्षक बोर्ड को एक साथ पूरा न भरकर, विषय को चरणबद्ध ढंग से विकसित करते हैं, ताकि बच्चे सीखने की प्रक्रिया के साथ-साथ चल सकें।

पाठ या गतिविधि के अंत में बोर्ड की नियमित सफाई की जाती है, जिससे अगली गतिविधि के लिए स्पष्टता बनी रहती है। इस प्रकार, आनंददायी कक्षा में ब्लैकबोर्ड या ग्रीन बोर्ड का विवेकपूर्ण और सहभागितापूर्ण उपयोग कक्षा को अधिक संवादात्मक, प्रभावी और सीखने के लिए प्रेरक बनाता है।

शिक्षक पढ़ाते कैसे हैं कि बच्चे आनंदित रहते हैं?

शिक्षक की पेडागॉजी केवल पढ़ाने की विधि नहीं, बल्कि बच्चों को समझने, उनके साथ सीखने और उन्हें आगे बढ़ने में सहायक बनने की कला है। प्रभावी पेडागॉजी वह होती है जो बाल-केंद्रित, समावेशी और आनंदपूर्ण अधिगम को बढ़ावा दे।

आनंददायी कक्षा में शिक्षक की पेडागॉजी के प्रमुख गुण

शिक्षक की पेडागॉजी यह निर्धारित करती है कि कक्षा में सीखना बोझ बनेगा या आनंद का अनुभव। आनंददायी शिक्षा में शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि बच्चों के साथ सीखने की यात्रा का सहयात्री होता है। ऐसी पेडागॉजी बच्चों के मन, अनुभव और गति को समझते हुए सीखने की प्रक्रिया को अर्थपूर्ण बनाती है। इस प्रकार आनंददायी कक्षा में शिक्षक की पेडागॉजी सर्वप्रथम बाल-केंद्रित होती है। शिक्षण बच्चों की रुचि, आवश्यकता, पूर्व ज्ञान और सीखने की गति के अनुसार योजनाबद्ध किया जाता है, न कि केवल पाठ्यपुस्तक या पाठ्यक्रम को पूरा करने के उद्देश्य से।

दूसरा प्रमुख गुण अनुभवात्मक और गतिविधि-आधारित शिक्षण है। शिक्षक सीखने को गतिविधियों, प्रयोगों, खेलों, कहानियों और वास्तविक जीवन के अनुभवों से जोड़ता है, जिससे बच्चे सक्रिय रूप से सीखने में संलग्न होते हैं और ज्ञान स्थायी बनता है। एक प्रभावी पेडागॉजी समावेशी होती है, जहाँ सभी बच्चों को भिन्न क्षमताओं, सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों और विभिन्न

भाषाओं वाले को भी बराबर सम्मान और सीखने के अवसर मिलते हैं। शिक्षक विविधताओं को चुनौती नहीं, बल्कि संसाधन के रूप में देखता है।

आनंददायी कक्षा में शिक्षण प्रक्रिया संवादात्मक और सहभागितापूर्ण होती है। एकतरफा व्याख्यान के स्थान पर प्रश्न-उत्तर, चर्चा, समूह कार्य और सहयोगात्मक गतिविधियों को महत्व दिया जाता है, जिससे बच्चों की सोच और अभिव्यक्ति विकसित होती है। ऐसी पेडागॉजी भयमुक्त और संवेदनशील होती है। बच्चों की गलतियों को दंड का कारण नहीं, बल्कि सीखने का अवसर माना जाता है। शिक्षक बच्चों की भावनाओं, कठिनाइयों और प्रयासों के प्रति संवेदनशील रहता है।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया स्थानीय संदर्भों से जुड़ी हुई होती है। उदाहरण, गतिविधियाँ और भाषा बच्चों के परिवेश, संस्कृति और दैनिक जीवन से संबंधित होती हैं, जिससे सीखना स्वाभाविक और अर्थपूर्ण बनता है। इसके साथ ही, शिक्षक की पेडागॉजी निरंतर और सहायक आकलन पर आधारित होती है। पारंपरिक परीक्षा-केंद्रित आकलन के बजाय अवलोकन, संवाद, पोर्टफोलियो और रूब्रिक्स का प्रयोग किया जाता है, ताकि बच्चों की प्रगति को समग्र रूप से समझा जा सके।

सबसे महत्वपूर्ण यह कि ऐसी पेडागॉजी आनंद और कल्याण को प्राथमिकता देने वाली होती है। कक्षा में सकारात्मक संबंध, भावनात्मक सुरक्षा और सीखने का आनंद बच्चों के समग्र विकास की आधारशिला बनते हैं। इस प्रकार, जब शिक्षक की पेडागॉजी बाल-केंद्रित, अनुभवात्मक, समावेशी और संवेदनशील होती है, तब कक्षा वास्तव में सीखने का एक सार्थक, आनंदपूर्ण और जीवनोपयोगी अनुभव बन जाती है।

आनंददायी कक्षा में शिक्षक की भाषा-शैली और बहुभाषी बच्चों का ध्यान

आनंददायी शिक्षा में शिक्षक की भाषा-शैली कक्षा के वातावरण, बच्चों की समझ और उनके आत्मविश्वास को सीधे प्रभावित करती है। विशेष रूप से बहुभाषी कक्षाओं में, शिक्षक की संवेदनशील और लचीली भाषा-शैली बच्चों को सीखने में सहज, सक्रिय और आत्मविश्वासी बनाती है। उनकी भाषा-शैली सरल, स्पष्ट और स्नेहपूर्ण होनी चाहिए। इसका अर्थ है कि शब्द और वाक्य बच्चों की आयु, समझ और स्तर के अनुसार हों और भाषा में अपनत्व और सम्मान झलके। इससे बच्चे बिना डर के अपनी बात रख सकते हैं और संवाद में सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं। भाषा प्रोत्साहन देने वाली होनी चाहिए; कठोर या आदेशात्मक शैली के बजाय सकारात्मक, प्रेरक और आश्वस्त करने वाले शब्दों का प्रयोग करें।

आनंददायी कक्षा में शिक्षक की भाषा संवादात्मक होती है। शिक्षक केवल बोलने वाला नहीं होता, बल्कि बच्चों की बातों को ध्यान से सुनता है और उनकी जिज्ञासा, शंका या विचारों का सम्मान करता है। भाषा लचीली और अनुकूलनीय होनी चाहिए, ताकि आवश्यकता अनुसार शब्दावली, उदाहरण और समझाने का तरीका बदलकर बच्चों की समझ सुनिश्चित की जा सके। इसके साथ ही, भाषा अहिंसक और गैर-आलोचनात्मक होनी चाहिए; बच्चों की भाषा या उच्चारण का उपहास न किया जाए और

हमेशा सम्मानजनक शब्दों का प्रयोग हो। बहुभाषी बच्चों का ध्यान रखने के लिए शिक्षक विशेष उपाय अपनाता है। सबसे पहले, बच्चों की मातृभाषा या स्थानीय भाषा का सम्मान और उपयोग किया जाता है, ताकि यह सीखने की बाधा न बने, बल्कि संसाधन के रूप में काम करे। शिक्षक आवश्यकतानुसार कोड-स्विचिंग और कोड-मिक्सिंग का विवेकपूर्ण प्रयोग कर सकते हैं, जिससे अर्थ स्पष्ट होता है और बच्चे आसानी से सीख पाते हैं। इसके साथ ही, शिक्षक दृश्य और क्रियात्मक सहायक सामग्री, जैसे— चित्र, संकेत, हाव-भाव, टी.एल.एम. और गतिविधियों का उपयोग करके समझ बढ़ाते हैं। बच्चों को सहपाठी सहायता के माध्यम से जोड़ी या समूह में काम करने के अवसर दिए जाते हैं, जिससे वे एक-दूसरे से सीख सकें और सामाजिक सहयोग विकसित हो।

शिक्षक धीरे-धीरे बच्चों को साधारण भाषा से अकादमिक भाषा की ओर ले जाते हैं, जिससे उन्हें समय और अवसर मिलते हैं कि वे नई भाषा को समझें और प्रयोग करें। कक्षा में भाषायी विविधता का उत्सव मनाया जाता है तथा अलग-अलग भाषाओं के शब्द, गीत, कहानियाँ और अनुभव साझा करने के अवसर दिए जाते हैं। आनंददायी शिक्षा में शिक्षक की संवेदनशील और बहुभाषी-अनुकूल भाषा-शैली कक्षा को समावेशी बनाती है और प्रत्येक बच्चे को बिना डर और बाधा के सीखने का अवसर प्रदान करती है।

आनंदपूर्ण शिक्षा में शिक्षक और बच्चों का मूल्यांकन

आनंदपूर्ण शिक्षा में मूल्यांकन केवल अंक या परीक्षा तक सीमित नहीं रहता। इसका मुख्य उद्देश्य बच्चों की सीख को समझना, उनकी क्षमताओं और प्रयासों की पहचान करना और उन्हें आगे बढ़ने में सहयोग देना होता है। जब मूल्यांकन प्रक्रिया सहयोगात्मक, सतत और बाल-केंद्रित होती है, तब यह बच्चों के लिए बोझ नहीं, बल्कि सीखने का आनंददायी अनुभव बन जाती है।

आनंदपूर्ण कक्षा में शिक्षक सतत एवं समग्र मूल्यांकन करते हैं। इसका अर्थ है कि मूल्यांकन केवल अंत-वार्षिक परीक्षा तक सीमित न रहकर, रोजमर्रा की गतिविधियों, खेल, चर्चा, चित्रकला और समूह कार्य के दौरान निरंतर किया जाए। शिक्षक बच्चों को गतिविधियों में शामिल होते देख, उनकी भागीदारी, प्रयास, भाषा प्रयोग, सोचने और सहयोग करने की क्षमता का अवलोकन करते हैं। शिक्षक खेल और गतिविधि-आधारित मूल्यांकन का भी उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, कहानी सुनाने, नाटक, चित्र बनाना, प्रयोग करना या समूह कार्य करना बच्चों की समझ और रचनात्मकता को परखने का अवसर देता है। इससे मूल्यांकन रोचक, सक्रिय और आनंदपूर्ण बनता है। रूब्रिक्स का प्रयोग भी आनंदपूर्ण मूल्यांकन में किया जाता है। शिक्षक सरल और स्पष्ट मानदंड तैयार करके बच्चों को यह बताते हैं कि उनसे क्या अपेक्षित है। इससे बच्चे अपनी प्रगति समझ पाते हैं और मूल्यांकन को चुनौती या दंड नहीं, बल्कि सीखने का मार्ग मानते हैं।

शिक्षक बच्चों को आत्म-मूल्यांकन और सहपाठी मूल्यांकन के अवसर भी देते हैं। बच्चे अपने काम पर सोचते हैं, सुधार करते हैं और सहपाठियों के कार्य को देखकर सीखते हैं। इससे

उनकी आत्म-जागरूकता और सामाजिक कौशल विकसित होते हैं।

गुणात्मक प्रतिक्रिया आनंदपूर्ण मूल्यांकन का अहम हिस्सा है। शिक्षक केवल अंक देने के बजाय मौखिक या लिखित सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं, जैसे— 'तुमने अच्छा प्रयास किया', 'तुम्हारा विचार रोचक है'। गलतियों को सीखने का अवसर माना जाता है, न कि दंड का कारण। अंततः शिक्षक बच्चों की उपलब्धियों और प्रयासों का उत्सव मनाते हैं। छोटे-छोटे प्रयासों और प्रगति की सराहना से बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है और सीखने की प्रेरणा कायम रहती है।

आनंदपूर्ण शिक्षा में शिक्षक का मूल्यांकन सहयोगात्मक, निरंतर, सहायक और सकारात्मक होता है, जिससे बच्चे सीखने के अनुभव को आनंददायी, उत्साहपूर्ण और सार्थक मानते हैं।

आनंददायी शिक्षा में माता-पिता और समाज की सहभागिता

आनंददायी शिक्षा में बच्चों का समग्र विकास तभी संभव है जब विद्यालय, माता-पिता और समाज मिलकर साझेदारी की भावना के साथ काम करें। सिर्फ शिक्षक और कक्षा तक सीमित शिक्षा से बच्चे पूरी तरह सक्रिय और आत्मविश्वासी नहीं बन पाते। इसलिए माता-पिता और समाज को शिक्षा प्रक्रिया में सम्मानपूर्वक शामिल करना आवश्यक है, जिससे सीखना अधिक सार्थक और आनंददायी बनता है। माता-पिता को शामिल करने के लिए शिक्षक नियमित संवाद और विश्वासपूर्ण संबंध स्थापित करते हैं। इसके लिए बैठकों, व्यक्तिगत चर्चा, फोन, डायरी या डिजिटल माध्यमों का प्रयोग किया जाता है, ताकि बच्चों की प्रगति, उनकी रुचियों और आवश्यकताओं पर लगातार जानकारी साझा की जा सके। केवल बच्चों की कमियों पर ध्यान न देकर, उनकी रुचि, प्रयास और प्रगति को सकारात्मक ढंग से साझा किया जाता है।

शिक्षक घर-विद्यालय कड़ी को भी मजबूत करते हैं। इसके अंतर्गत बच्चों के लिए सरल घरेलू गतिविधियाँ, कहानी सुनाना, खेल और बातचीत सुझाई जाती हैं, जो सीखने को घर से जोड़ती हैं। माता-पिता को कक्षा गतिविधियों, उत्सवों, प्रदर्शनी, पठन दिवस और खेल दिवस में सहभागी बनाया जाता है, जिससे वे बच्चों की शिक्षा और सीखने की प्रक्रिया का सक्रिय हिस्सा बन सकें। इसके साथ ही, शिक्षक माता-पिता को बाल विकास, सकारात्मक अनुशासन, भाषा विकास और भावनात्मक सहयोग पर छोटे मार्गदर्शन सत्र भी प्रदान करते हैं। समाज को शामिल करने के लिए विद्यालय स्थानीय संसाधनों का उपयोग करता है। कारीगर, किसान, डॉक्टर, कलाकार या बुज़ुर्ग बच्चों के लिए शिक्षा में जीवन के अनुभव जोड़ने के लिए आमंत्रित किए जाते हैं। स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है, जैसे— लोककथाएँ, त्योहार, गीत, खेल और कला। शिक्षक बच्चों को समुदाय आधारित परियोजनाओं में शामिल करते हैं, जैसे— स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और जल संरक्षण पर सामूहिक गतिविधियाँ। विद्यालय को सामुदायिक केंद्र बनाया जाता है, जहाँ बैठकें, प्रदर्शनियाँ और सामाजिक संवाद आयोजित किए जाते हैं। समाज

को केवल सहायक नहीं, बल्कि शिक्षा का सहभागी और सह-निर्माता माना जाता है।

आनंददायी शिक्षा में माता-पिता और समाज की सक्रिय सहभागिता से विद्यालय एक जीवंत सीखने का समुदाय बनता है, जहाँ बच्चों का समग्र विकास साझा उत्तरदायित्व के रूप में सुनिश्चित होता है और सीखना उनके लिए आनंददायी बन जाता है।

निष्कर्ष

आधुनिक शिक्षा में आनंद, सुरक्षा और आत्मविश्वास बच्चों के सीखने के केंद्र में होते हैं। आनंददायी कक्षा केवल विषयवस्तु का स्थान नहीं, बल्कि बच्चों के भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक विकास का साझा मंच होती है। ऐसी कक्षा में बच्चे निडर, सक्रिय और रचनात्मक बनते हैं, जहाँ सहयोग, संवाद और सहभागिता का माहौल होता है। शिक्षक की भूमिका इस प्रक्रिया में केंद्रीय है। बाल-केंद्रित, अनुभवात्मक, समावेशी और संवेदनशील पेडागॉजी के माध्यम से शिक्षक सीखने को अर्थपूर्ण, रोचक और आनंदपूर्ण बनाते हैं। शिक्षक की भाषा सरल, स्पष्ट, स्नेहपूर्ण और बहुभाषी-अनुकूल होती है, जिससे सभी बच्चे बिना डर और बाधा के सीखने में सहभागी बनते हैं। मूल्यांकन केवल अंक देने तक सीमित नहीं, बल्कि सहयोगात्मक, सतत, सकारात्मक और बच्चों के प्रयासों को मान्यता देने वाला होता है, जिससे सीखना उत्साहपूर्ण और सार्थक बनता है।

आनंददायी शिक्षा में माता-पिता और समाज की सहभागिता भी अनिवार्य है। नियमित संवाद, घर और विद्यालय का संबंध, स्थानीय संसाधनों का उपयोग और सामुदायिक परियोजनाओं के माध्यम से शिक्षा का अनुभव साझा और समग्र बनता है। अतः आनंददायी शिक्षा वह है जो बच्चों को सुरक्षित, प्रेरित, सक्रिय और आत्मविश्वासी बनाती है; शिक्षक, माता-पिता और समाज की सहभागिता के माध्यम से सीखने को जीवनोपयोगी, सार्थक और आनंदपूर्ण अनुभव में परिवर्तित करती है।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2023. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2023. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023* (अंतिम संस्करण). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.in/pdf/NCFSE-2023-August_2023.pdf

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.